

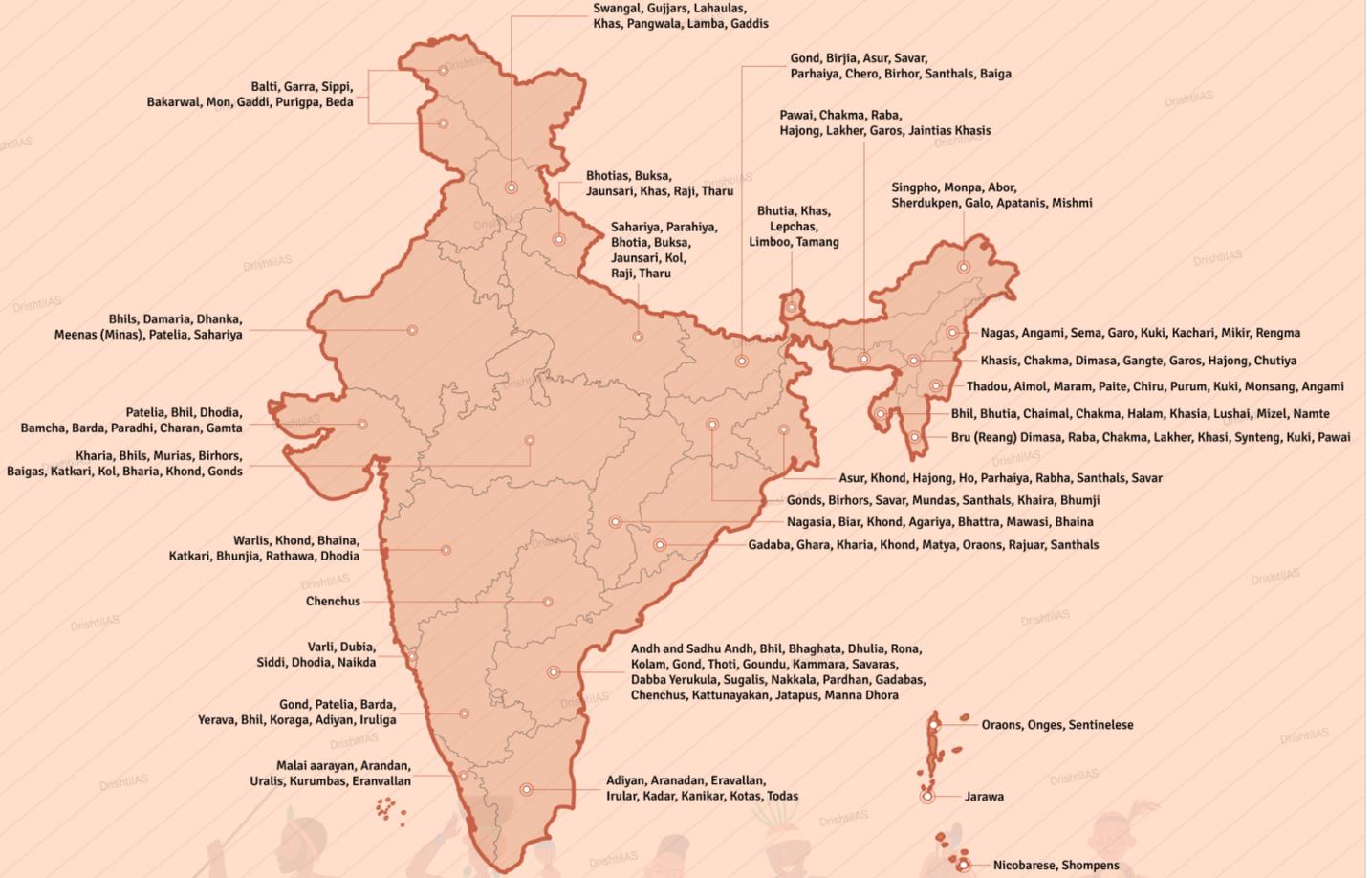
## कांध जनजाति

**स्रोत: द हट्टि**

ओडिशा के कंधमाल ज़िले की **कांध/कॉंध** जनजाति की महिलाओं में चेहरे पर टैटू गुदवाने की परंपरा धीरे-धीरे लुप्त होती जा रही है, जो एक ओरअतीत के आघात को और दूसरी ओर वर्तमान के सशक्तीकरण को दर्शाती है।

- कांध महिलाओं के चेहरे पर गुदवाए जाने वाले टैटू, जो लगभग **10 वर्ष की उम्र से ज्यामितीय आकृतियों** में बनाए जाते थे, सजावटी नहीं बल्कि एक प्रकार की सुरक्षा का माध्यम थे, जो ज़मींदारों, राजघरानों और ब्रिटिश उपनिवेशवादियों द्वारा **यौन शोषण** से बचाव के लिये बनाए जाते थे।
- **कांध जनजाति: वर्ष 2001 की जनगणना** के अनुसार यह ओडिशा की सभी **62 जनजातियों में संख्यात्मक रूप से सबसे अधिक है**, जो राज्य की जनजातीय आबादी का **17.13%** है।
  - वे **कुई या कुवी (द्रवडि भाषाएँ)** बोलते हैं और स्वयं को द्रवडि मूल की कुई तथा कुवी भाषाओं में **'कुई लोको', 'कुई एंजू' या 'कुईगा'** कहते हैं।
  - इनमें **एकल परिवार सामान्य हैं और संयुक्त परिवार बहुत कम पाए जाते हैं।**
  - उनकी आबादी मुख्य रूप से **दक्षिण और मध्य ओडिशा** में विशेषकर **कंधमाल, रायगढ़, कोरापुट और कालाहांडी ज़िलों में केंद्रित है।**
  - कांध समुदायों में, **कुटिया कांध और डोंगरिया कांध को विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूह (PVTG)** के रूप में मान्यता प्राप्त है।
    - **PVTG अनुसूचित जनजातियों का एक अधिक असुरक्षित उप-समूह है।** भारत में 75 PVTG हैं, जिनमें सबसे अधिक **ओडिशा (13)** में हैं, उसके बाद **आंध्र प्रदेश (12)** में हैं।
  - डोंगरिया कांध नयिमगरिपिहाड़ियों में खनन का वरिध करने के लिये जाने जाते हैं, जबकि कुटिया कांध अलग-अलग घरों में रहते हैं, जिनकी मंजिलें **गाँव की सड़क के स्तर से लगभग 2 फीट नीचे हैं।**

# भारत में प्रमुख जनजातियाँ



- अनुसूचित जनजाति भारत की जनसंख्या का 8.6% है (जनगणना 2011)। मसौदा राष्ट्रीय जनजातीय नीति, 2006 में भारत की 698 अनुसूचित जनजातियाँ दर्ज हैं।
- विशेष रूप से कमज़ोर जनजातीय समूह (PVTGs) ऐसी जनजातियों का समूह है जो जनजातीय समूहों के बीच अधिक असुरक्षित/सुभेद्य हैं। 75 सूचीबद्ध PVTGs में से सबसे अधिक संख्या ओडिशा में पाई जाती है।
- भील भारत का सबसे बड़ा आदिवासी समूह (भारत की कुल अनुसूचित जनजातीय आबादी का 38% है)।
- भारत की सबसे अधिक जनजातीय आबादी मध्य प्रदेश में पाई जाती है (जनगणना 2011)।
- संयाल भारत की सबसे पुरानी जनजाति है। संयालों की शासन प्रणाली, जिसे मांडू-परगना के नाम से जाना जाता है, की तुलना स्थानीय स्वशासन से की जा सकती है।
- अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति सूची (परिशोधन आदेश), 1956 के अनुसार, लक्षद्वीप के ऐसे निवासी जो स्वयं और जिनके माता-पिता दोनों इन द्वीपों में पैदा हुए थे, उन्हें अनुसूचित जनजाति के रूप में माना जाता है।
- संविधान का अनुच्छेद 342 अनुसूचित जनजातियों के विनिर्देशन के लिये अपनाई जाने वाली प्रक्रिया का निर्धारण करता है।
- अनुच्छेद 275 अनुसूचित जनजातियों के कल्याण को बढ़ावा देने और उन्हें बेहतर प्रशासन प्रदान करने के लिये केंद्र सरकार द्वारा राज्य सरकार को विशेष धन देने का प्रावधान करता है।

और पढ़ें: [डोंगरिया कोंध जनजाति](#)